CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रीगुरुगीता

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

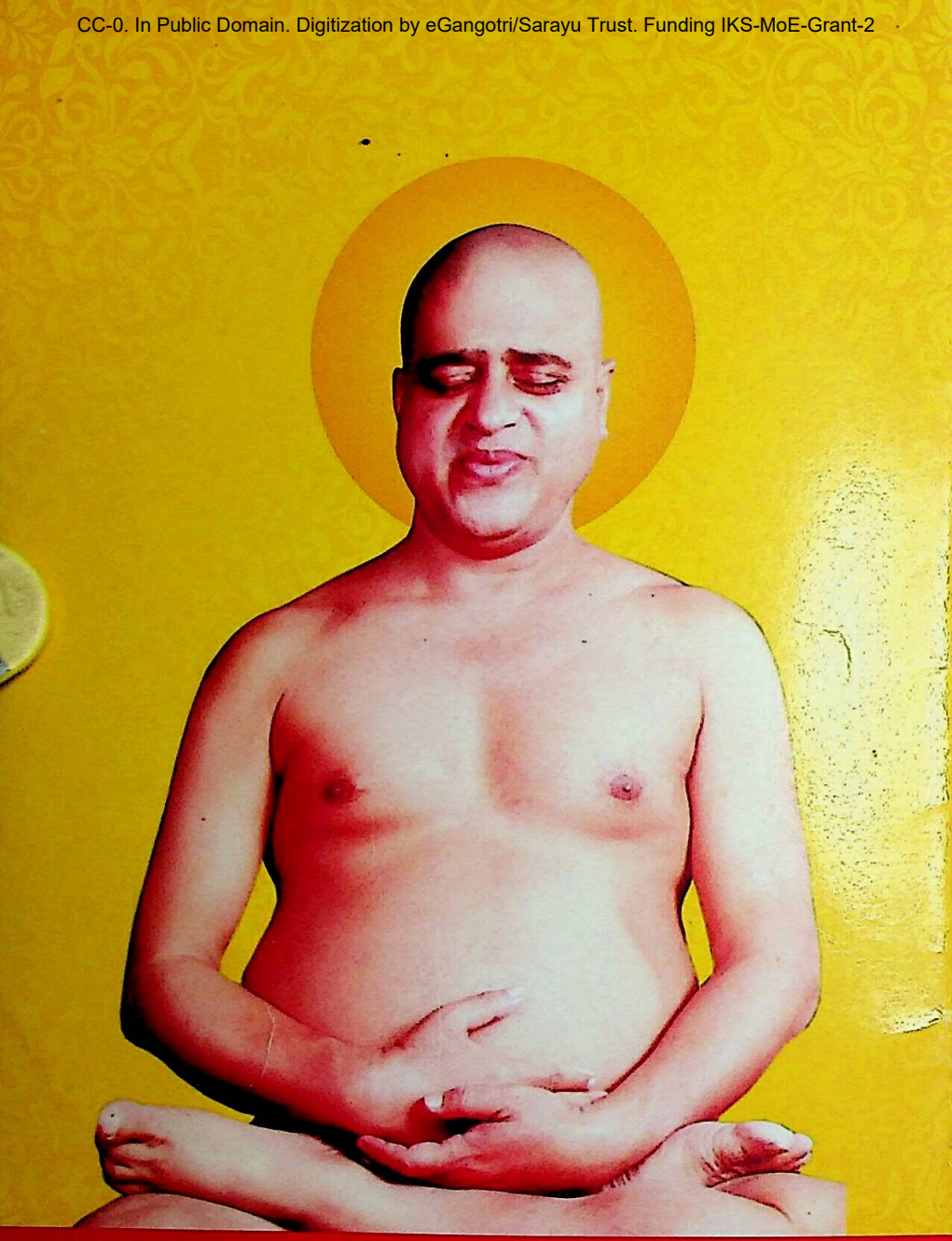

श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ अनंत श्री विभूषित

सद्गुरु स्वामी आत्मानंद परमहंस

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

।। श्री गुरुगीता ।।

(हिन्दी अनुवाद)

8707649974

आनन्द आश्रम

पता- आनन्द आश्रम, बमरौली कटरा, फतेहाबाद रोड,

आगरा (उ.प्र.) फोन :- +91-8126874370

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्राक्कथन

यह गुरुगीता मुमुक्षुकों के लिए एक वरदान है। गुरुदेव ज्ञान रूप अमृत हैं और वेदान्त के अर्थों को समझाने वाले परम आचार्य हैं। आचार्य से प्राप्त विद्या ही फलित होती है। सद्गुरु अपने अनुभव से उत्तम साधकों का सहज में ही कल्याण कर देते हैं। वे ही जीव और ब्रह्म की एकता की अनुभूति कराने में सामर्थ्यवान हैं। अनधिकारी को अधिकारी बनाते हैं।

इस गुरुगीता में गुरुभक्ति को विस्तार से प्रकट किया गया है तथा गुप्त और रहस्यमय आत्म-ज्ञान तथा गुरु के स्वरूप का उपदेश शिव-पार्वती संवाद में यहाँ प्रस्तुत किया गया है जो सभी साधकों के लिए पापनाशक, शान्तिदायक, भोग और मोक्ष को देने वाला अमरफल है, अभयदान है।

इस गुरुगीता का सदैव श्रद्धा और भक्तिपूर्वक रसपान करना चाहिए तथा मोक्ष की प्राप्ति के लिए ब्रह्मनिष्ठ सद्गुरु/महापुरुष की शरण में जाकर निर्गुण निराकार ब्रह्म का साक्षात्कार करना चाहिए। यही कल्याण का मार्ग है।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

—प्रकाशक
स्वामी आत्मानन्द

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्री गुरु गीता

(प्रथम अध्याय)

ब्रह्मानन्दं परमसुखदं केवलं ज्ञानमूर्तिं।
द्वन्दातीतं गगनसदृशं तत्वमस्यादिलक्ष्यम्।
एकं नित्यं विमलमचलं सर्वधीसाक्षीभूतम्,
भावातीतं त्रिगुणरहितं सदगुरुं तं नमामि।।

जो ब्रह्मानन्द स्वरूप हैं, परम सुख देने वाले हैं, जो केवल ज्ञानस्वरूप हैं, द्वन्द्वों से रहित हैं, आकाश के समान सूक्ष्म और सर्वव्यापक हैं, तत्वमसि आदि महावाक्यों के लक्ष्यार्थ हैं, एक हैं, नित्य हैं, मलरहित हैं, अचल हैं, सर्वबुद्धियों के साक्षी हैं, भावना से परे हैं, सत, रज, और तम तीनों गुणों से रहित हैं, ऐसे श्री सद्गुरुदेव को मैं नमस्कार करता हूँ।। 1।।

ऋषियों ने कहा, हे महाज्ञानी ! हे वेद-वेदांगों के निष्णात प्यारे सूत जी ! सर्वपापों का नाश करने वाले गुरु का स्वरूप हमें सुनाओ। जिसको सुनने मात्र से मनुष्य दुःखों से विमुक्त हो जाता है। जिस उपाय से मुनियों ने सर्वज्ञता प्राप्त की है, जिसको प्राप्त करके मनुष्य फिर से संसार बन्धन में बँधता नहीं, ऐसे परमतत्व का कथन आप करें। जो तत्व परम रहस्यमय एवं श्रेष्ठ सारभूत है और विशेषकर जो गुरुगीता है, वह आपकी कृपा से हम सुनना चाहते हैं। प्यारे सूतजी ! वे सब हमें सुनाइए।। 2।।

इस प्रकार बार-बार प्रार्थना किये जाने पर सूतजी बहुत प्रसन्न होकर मुनियों के समूह से मधुर वचन बोले। सूतजी ने

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कहा, हे सर्व मुनियो ! संसार रूपी रोगों का नाश करने वाली माता के समान ध्यान रखने वाली गुरुगीता कहता हूँ, उसको आप अत्यन्त श्रद्धा और भक्ति से सुनिये।। 3।।

प्राचीनकाल में सिद्धों और गन्धर्वों के आवास रूप कैलाश पर्वत पर कल्पवृक्ष के फूलों से बने हुए अत्यन्त सुन्दर मन्दिर में, मुनियों के बीच व्याघ्रचर्म पर बैठे हुए, शुक आदि मुनियों द्वारा वन्दन किये जाने वाले और परमतत्व का बोध देते हुए भगवान शंकर को बार-बार नमस्कार करते देखकर देवी पार्वती ने आश्चर्यचकित होकर पूछा ! हे ओंकार के अर्थस्वरूप, देवों के देव, श्रेष्ठों से श्रेष्ठ, हे जगद्गुरु ! आपको प्रणाम हो ! देव, दानव और मानव सब आपको सदा भक्तिपूर्वक प्रणाम करते हैं। आप सदा ब्रह्मा, विष्णु, इन्द्र आदि के नमस्कार योग्य हैं। ऐसे नमस्कार के आश्रय रूप होने पर भी आप किसको नमस्कार करते हैं ! हे भगवान ! हे सर्वधर्मों के ज्ञाता ! हे शम्भो ! जो व्रत सब व्रतों में श्रेष्ठ है, ऐसा उत्तम गुरु-माहात्म्य कृपा करके मुझे कहें। देहधारी जिस साधना मार्ग से ब्रह्ममय हो सकता है, वह मुझे कहें।।4।।

इस प्रकार बार-बार प्रार्थना किये जाने पर महादेव महेश्वर ने अन्तर में खूब प्रसन्न होते हुए देवी पार्वती से इस प्रकार कहा—हे देवी ! यह तत्व रहस्यों का भी रहस्य है, इसलिए कहना उचित नहीं, फिर भी तुम्हारी भक्ति देखकर यह रहस्य कहता हूँ। जिसको ईश्वर में उत्तम भक्ति होती है, वैसी ही भक्ति गुरु में होती है। ऐसे महात्माओं को ही यहाँ कही हुई बात समझ में आयेगी।।5।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्री गुरुदेव समस्त जगत के अभिन्न, निमित्त और उपादान कारण हैं। 'अहं' और 'सः' इन दो दिव्य कमलों के दो पत्तों से विश्व की रचना के लिए अनेक शरीरों में अपनी इच्छा से स्वतन्त्र रूप से सदा निवास करते हैं। परमशिव पद से स्वयं प्रकाशित उनके चरणदीप ज्योतिशिखा के सदृश हैं। साक्षात् अक्षर शरीर हैं। शब्दातीत होते हुए भी 'अ' से 'क्ष' तक समस्त अक्षर ही उनका शरीर है। ऐसे सर्वव्यापक, विभु, शाश्वत, अनन्तश्री विभूषित, ब्रह्मनिष्ठ परमहंस श्री सद्गुरुदेव का ध्यान करना चाहिए।।6।।

भगवतस्वरूप श्री गुरुदेव ज्ञान, वैराग्य, ऐश्वर्य, यश, लक्ष्मी और मधुर वाणी ये छह गुणरूप ऐश्वर्य से सम्पन्न होते हैं। मनुष्यों के लिए गुरु ही शिव हैं। ब्रह्मा, विष्णु और शिव सहित गुरुदेव ही समस्त जगत हैं। गुरु ही देव हैं। गुरु ही बान्धव हैं। गुरु ही आत्मा हैं। गुरु ही जीव हैं। सचमुच गुरुदेव के सिवा अन्य कुछ भी नहीं है। इसलिए सदा गुरुदेव की पूजा करनी चाहिए।।7।।

गुरु नित्य, निर्गुण, निराकार, परमब्रह्म का बोध देते हुए जैसे एक दीपक दूसरे दीपक को प्रज्ज्वलित करता है, वैसे ही शिष्य में ब्रह्म भाव प्रकटाते हैं। गुरुदेव की कृपा से अपने भीतर ही आत्मानन्द प्राप्त करके समता और मुक्ति के मार्ग द्वारा शिष्य आत्मज्ञान को उपलब्ध होता है। जैसे स्फटिक मणि में स्फटिक मणि तथा दर्पण में दर्पण दिख सकता है, उसी प्रकार आत्मा में सत-चिद् और आनन्दमय दिखाई देता है, वही अपना निज स्वरूप है। अपने निज स्वरूप का दर्शन होने पर अनुभव होता

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

है कि मैं अजन्मा हूँ, अमर हूँ, मेरा आदि नहीं, मेरी मृत्यु नहीं है, मैं निर्विकार हूँ, मैं अणु से भी छोटा और महान से भी महान हूँ, यही ब्रह्मस्थिति है।। 8।।

ब्रह्म को स्वभाव से ही अपूर्व, अद्वितीय, नित्य, ज्योतिस्वरूप, निरोग, निर्मल, परम आकाश स्वरूप, अचल, आनन्द स्वरूप, अविनाशी, इन्द्रिय, अन्तःकरण और प्रकृति से अगम्य, अगोचर, नामरूप से रहित तथा निःशब्द जानना चाहिए। जिस प्रकार कर्पूर, फूल इत्यादि में गन्धत्व, अग्नि में उष्णता और जल में शीतलता स्वभाव से ही होते हैं, उसी प्रकार ब्रह्म में शाश्वतता भी स्वाभाविक है। जिस प्रकार कटक, कुण्डल आदि आभूषण स्वभाव से ही स्वर्ण हैं, उसी प्रकार मैं स्वभाव से ही शाश्वत ब्रह्म हूँ।। 9।।

स्वयं वैसा होकर किसी न किसी स्थान में रहना; जैसे कीड़ा भ्रमर का चिन्तन करते करते भ्रमर हो जाता है वैसे ही जीव ब्रह्म का ध्यान करते-करते ब्रह्म स्वरूप हो जाता है। वह किसी भी स्थान में रहता हो फिर भी वह मुक्त है। इसमें कोई संशय नहीं। अकेला, शान्त, कामनारहित, चिन्तारहित, ईर्ष्यारहित और बालक की तरह जो शोभता है, वह ब्रह्म ज्ञानी कहलाता है। जो ब्रह्म अचिन्त्य, अव्यक्त, तीनों गुणों से रहित, त्रिगुणात्मक और समस्त जगत का अधिष्ठान रूप है, ऐसे ब्रह्मस्वरूप श्री गुरुदेव को नमस्कार हो।। 10।।

जो गुरु हैं, वे ही शिव हैं, जो शिव हैं, वे ही गुरु हैं। दोनों में जो अन्तर मानता है, वह गुरु तत्व को नहीं जानता। ब्रह्मा, विष्णु और शिव भी गुरु कृपा से जगत की उत्पत्ति, पालन और

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

संहार करने में समर्थ हुए हैं। ब्रह्मरूप गुरुदेव से श्रेष्ठ अन्य कुछ भी नहीं है। अतः वेद की ऋचाएँ भी 'न इति न इति' कहकर उसका संकेत मात्र देती हैं। इति इति रूप से उसका अनुभव होता है, उस परमतत्व का साक्षात्कार ऋचाएँ भी नहीं कर पाती हैं। इसलिए मन और वाणी से सदा श्री गुरुदेव की आराधना करनी चाहिए।। 11।।

गुरुदेव की भक्ति से श्रेष्ठ कुछ भी नहीं है। गुरु की सेवा ही तीर्थराज गया है, गुरुदेव का शरीर अक्षय वटवृक्ष है। गुरुदेव के श्रीचरण भगवान विष्णु के श्रीचरण हैं। वहाँ लगाया हुआ मन भक्ति में लीन होकर आत्माकार बन जाता है। यही कल्याण का मार्ग है, अतः गुरुदेव के बताये हुए मार्ग पर चलकर श्री गुरुदेव का ध्यान करना चाहिए।। 12।।

वेद, शास्त्र, पुराण, इतिहास आदि तन्त्र, मन्त्र, यन्त्र, मारण, जारण, वशीकरण, मोहन, उच्चाटन आदि विद्या, शैव, शाक्त, आगम और अन्य सर्व मत-मतान्तर ये सब बातें गुरु तत्व को जाने बिना भ्रान्त चित्त वाले जीवों को पथभ्रष्ट करने वाली हैं और जप, तप, व्रत, तीर्थ, यज्ञ, दान ये सब व्यर्थ हो जाते हैं। गुरुदीक्षा के प्रभाव से सर्वकर्म सफल होते हैं। गुरुदेव की सम्प्राप्ति रूपी परम लाभ से अन्य सर्वलाभ मिलते हैं। जिसका गुरु नहीं वह मूर्ख है।। 13।।

मनुष्य चाहे चारों वेद पढ़ ले, चार उपवेद पढ़ ले, वेद के छह अंग पढ़ ले, फिर भी गुरु के बिना ज्ञान नहीं मिलता। चाहे कोई ब्रह्मा, विष्णु और शिव की पूजा में रत हो, चाहे तैंतीस करोड़ देवताओं की पूजाओं में रत हो, परन्तु गुरुतत्व के ज्ञान से

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रहित हो, तो वह सब व्यर्थ है। ज्ञान के बिना मोक्ष नहीं मिलता तथा बिना ज्ञान के अज्ञान दूर नहीं होता। अतः गुरुदेव से आत्मज्ञान प्राप्त करना चाहिए।। 14।।

वेद और शास्त्रों में सुख नहीं है, मन्त्र और यन्त्र में सुख नहीं है। इस पृथ्वी पर गुरुदेव की कृपा-प्रसाद के सिवा अन्यत्र कहीं भी सुख नहीं है। गुरुदेव के श्रीचरणों में जो वेदान्त निर्दिष्ट सुख है, वह सुख न चार्वाक मत में, न वैष्णव मत में, न प्रभाकर मत में, न शाक्त मत में, न सौर मत में, न गाणपत्य मत में है। वीतराग मुनि को जो सुख मिलता है, वह सुख इन्द्र को भी नहीं मिलता, चक्रवर्ती राजाओं की तो बात ही क्या है ? हमेशा ब्रह्मरस का पान करके जो परमात्मा में तृप्त हो गया, वह मुनि इन्द्र को भी गरीब मानता है। अतः मोक्ष की आकांक्षा करने वालों को गुरुभक्ति खूब करनी चाहिए, क्योंकि गुरुकृपा से ही मोक्ष की प्राप्ति होती है।। 15।।

जगत गूढ़ अविद्यात्मक माया रूप है और शरीर अज्ञान से उत्पन्न हुआ है। इसका विश्लेषणात्मक ज्ञान जिनकी कृपा से होता है, उस ज्ञान को गुरु कहते हैं। आत्मा में गुरु बुद्धि के सिवा अन्य कुछ भी सत्य नहीं है। इसलिए इस आत्मज्ञान को प्राप्त करने के लिए बुद्धिमानों को प्रयत्न करना चाहिए।। 16।।

श्री गुरुदेव के पाद सेवन से मनुष्य सर्वपापों से मुक्त होकर ब्रह्मरूप हो जाता है। श्री गुरुदेव का चरणामृत पाप रूप कीचड़ का सम्यक् शोषक है। ज्ञान तेज का सम्यक् उद्दीपक है और संसार सागर का सम्यक् तारक है। अज्ञान की जड़ को उखाड़ने वाले, अनेक जन्मों के कर्मों को निवारने वाले, ज्ञान

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

और वैराग्य को सिद्ध करने वाले श्री गुरुदेव के चरणामृत का पान करना चाहिए। सात समुद्र पर्यन्त के सर्व तीर्थों में स्नान करने से जो फल मिलता है, वह फल श्री गुरुदेव के चरणामृत के एक बिन्दु के फल का हजारवाँ हिस्सा है।। 17।।

अपने गुरुदेव के नाम का कीर्तन अनन्त स्वरूप भगवान शिव का ही कीर्तन है। अपने गुरुदेव के नाम का चिन्तन अनन्तस्वरूप भगवान शिव का ही चिन्तन है। ब्रह्म श्री गुरुदेव के वचनामृत में स्थित है। यह ब्रह्म उनकी कृपा से प्राप्त हो जाता है। इसलिए जिस प्रकार स्वेच्छाचारी स्त्री अपने प्रेमी पुरुष का ध्यान करती है, उसी प्रकार सदा श्री गुरुदेव का ध्यान करतें रहना चाहिए।। 18।।

श्री गुरुदेव के स्मरण मात्र से ज्ञान अपने आप प्रकट होने लगता है, वे ही सर्वश्रुति रूप श्रेष्ठ रत्नों से सुशोभित चरण कमल वाले और वेदान्त के अर्थों के प्रवक्ता हैं, ऐसे सदगुरुदेव को सदा नमस्कार करना चाहिए और उनकी नित्य पूजा करनी चाहिए।। 19।।

गुरु शब्द का प्रथम अक्षर 'गु'कार माया आदि गुणों का प्रकाशक है और दूसरा अक्षर माया की भ्रान्ति से मुक्ति देने वाला परब्रह्म है। 'गु' शब्द का अर्थ है अज्ञान रूपी अन्धकार और 'रु' शब्द का अर्थ है ज्ञान रूपी प्रकाश। अज्ञान को नष्ट करने वाला जो ब्रह्मरूप प्रकाश है, वह गुरु है। इसमें कोई संशय नहीं। गुकार से गुणातीत तथा रुकार से रूपातीत कहा जाता है। अतः गुण और रूप से परे होने के कारण गुरु कहलाते हैं।। 20।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

संसाररूपी वृक्ष पर चढ़े हुए लोग नरकरूपी सागर में गिरते हैं। संसाररूपी अरण्य में प्रवेश करने के बाद दिग्मूढ़ की स्थिति में जब कोई मार्ग दिखाई नहीं देता, उस समय जिन्होंने मार्ग दिखाया, उन तारणहार श्री गुरुदेव को नित्य प्रणाम करना चाहिए।। 21।।

इस पृथ्वी पर त्रिविध ताप रूपी अग्नि से जलने के कारण अशान्त हुए प्राणियों के लिए गुरुदेव ही एकमात्र उत्तम गंगाजी हैं। अतः जब विकट परिस्थितियाँ होती हैं तब गुरुदेव ही एकमात्र परम बान्धव हैं। ऐसे श्री गुरुदेव की तन, मन और धन से निष्काम भाव से सेवा करते हुए उनका ध्यान करना चाहिए और आत्मज्ञानी होने के पश्चात् भी शिष्य को गुरुदेव की शरण नहीं छोड़नी चाहिए।। 22।।

जब तक दृश्य प्रपंच की विस्मृति न हो जाये, तब तक श्री गुरुदेव के पावन चरणामृत की पूजा अर्चना करनी चाहिए। ऐसा करने वालों को ही कैवल्य पद की प्राप्ति होती है। यदि सम्पूर्ण तत्वज्ञ भी गुरु का त्याग कर दे तो उसे मृत्यु के समय महान विक्षेप अवश्य हो जाता है। यदि शिवजी नाराज हो जायें तो गुरुदेव बचाने वाले हैं, किन्तु गुरुदेव नाराज हो जायें तो बचाने वाला कोई नहीं है। अतः सद्गुरुदेव को प्राप्त करके सदा उनकी शरण में रहना चाहिए।। 23।।

देव, किन्नर, गन्धर्व, पितर, यक्ष, तुम्बरू और मुनि लोग भी गुरु सेवा की विधि नहीं जानते। तार्किक, ज्योतिषी, कर्मकाण्डी, विषयी, पामर जीव, निर्मल गुरुतत्व को नहीं जानते। गुरु सेवा से विमुख गन्धर्व, पितर, यक्ष, चारण, ऋषि,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सिद्ध और देवता आदि भी मुक्त नहीं होंगे। यदि गुरु तत्व से पराङ्मुख हो जायें तो याज्ञिक, योगी, तपस्वी, तीर्थवासी, जापक और दाता भी मुक्त नहीं हो सकते।। 24।।

तप और विद्या के बल के कारण और महाअहंकार के कारण जीव इस संसार में रहट की तरह बार-बार भटकता रहता है। अतः गुरुदेव के द्वारा उपदिष्ट मार्ग से मन की शुद्धि करनी चाहिए। जो कुछ भी अनित्य वस्तुएँ अपनी इन्द्रियों का विषय हो जाये, उनका तथा जो भी असत हो, उनका खण्डन कर सत्य का मण्डन करना चाहिए। गुरुदेव की परमकृपा के बिना चित्त की विश्रान्ति दुर्लभ है।। 25।।

गुरुदेव की बात का कभी उल्लंघन नहीं करना चाहिए, क्योंकि गुरुदेव के द्वारा कही हुई बातें रहस्यमय होती हैं, उन्हें अज्ञानी व्यक्ति नहीं जान सकते। रात-दिन गुरुदेव की आज्ञा का पालन करते हुए उनके सानिध्य में दास बनकर रहना चाहिए। जो द्रव्य गुरुदेव ने नहीं दिया हो, उसका उपभोग कहीं भी नहीं करना चाहिए। गुरुदेव के दिये हुए द्रव्य को गरीब की तरह ग्रहण करना चाहिए, उससे प्राण भी प्राप्त हो सकते हैं।। 26।।

पादुका, आसन, बिस्तर आदि जो कुछ भी गुरुदेव के उपयोग में आते हों, उन्हें पैर से कभी नहीं छूना चाहिए। उन वस्तुओं को नमस्कार करना चाहिए। चलते हुए गुरुदेव के पीछे चलना चाहिए। उनकी परछाईं का भी उल्लंघन नहीं करना चाहिए। गुरुदेव के समक्ष कीमती वेशभूषा, आभूषण आदि धारण नहीं करने चाहिए।। 27।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गुरुदेव के समक्ष प्रज्ञावान शिष्य को कभी हुंकार शब्द से नहीं बोलना चाहिए तथा असत्य भाषण भी नहीं करना चाहिए। गुरु के रहने पर अपने आप कभी किसी को उपदेश नहीं देना चाहिए। इस प्रकार उपदेश देने वाला ब्रह्म राक्षस होता है।।28।।

गुरु के आश्रम में नशा करना, टहलना, दीक्षा देना, व्याख्यान करना, प्रभुत्व दिखाना और गुरु को आज्ञा करना निषिद्ध है। गुरु के आश्रम में अपना छप्पर और पलंग नहीं बनाना चाहिए। पैर नहीं पसारना चाहिए, शरीर के भोग और अन्य लीलाएँ भी नहीं करनी चाहिए।। 29।।

करुणामयी तलवार के प्रहार से शिष्य के आठों पाशों संशय, दया, भय, संकोच, निन्दा, प्रतिष्ठा, कुल अभिमान और सम्पत्ति को काटकर निर्मल आनन्द देने वाले को सद्गुरु कहते हैं। ऐसा सुनने पर भी जो मनुष्य निन्दा करता है वह जब तक सूर्य-चन्द्र का अस्तित्व रहता है, तब तक घोर नरक में रहता है। गुरुदेव की निन्दा करने वाले को देखकर यदि उसकी जिह्वा काट डालने में समर्थ न हो तो उसे अपने स्थान से भगा देना चाहिए। यदि वह ठहरे तो स्वयं उस स्थान का त्याग करना चाहिए।।30।।

सदा और सर्व अवस्थाओं में अद्वैत की भावना करनी चाहिए, परन्तु गुरुदेव के साथ अद्वैत की भावना कदापि नहीं करनी चाहिए। मोक्ष की आकांक्षा करने वालों को गुरुभक्ति खूब करनी चाहिए, क्योंकि गुरुदेव के द्वारा ही परम मोक्ष की प्राप्ति होती है। गुरुदेव की सेवा करके जो महावाक्य के अर्थ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

को समझते हैं, वे ही सच्चे संन्यासी हैं अन्य तो मात्र वेशधारी हैं।।31।।

गुरुदेव के वाक्य की सहायता से जिसने ऐसा निश्चय कर लिया कि मैं एक और अद्वितीय हूँ और उसी अभ्यास में जो नित्य रत है, उसके लिए अन्य वनवास का सेवन आवश्यक नहीं है क्योंकि अभ्यास से ही एक क्षण में समाधि लग जाती है और उसी क्षण इस जन्म तक के सभी पाप नष्ट हो जाते हैं। इसलिए सब प्रकार के प्रयत्न से अनासक्त होकर शास्त्र का मायाजाल छोड़कर गुरुदेव की ही शरण लेनी चाहिए।।32।।

गुरुदेव का दर्शन पाकर उनके कृपा प्रसाद से सब प्रकार की आसक्ति छोड़कर एकाकी, निःस्पृह और शान्त होकर रहना चाहिए। जो गुरु अपने दर्शन से शिष्य को भ्रान्ति में डालता है, ऐसे गुरु को प्रणाम नहीं करना चाहिए। इतना ही नहीं दूर से ही उसका त्याग कर देना चाहिए। ऐसी स्थिति में ब्रह्मनिष्ठ गुरु का ही सहारा लेना चाहिए।।33।।

पाखण्डी, पाप में रत, नास्तिक, भेद-बुद्धि उत्पन्न करने वाले, स्त्री लम्पट, दुराचारी, नमक हराम, बगुले की तरह ठगने वाले, कर्मभ्रष्ट, क्षमारहित, निन्दनीय तर्कों से वितण्डावाद करने वाले, कामी, क्रोधी, हिंसक, उग्र, शठ तथा अज्ञानी और महापापी पुरुष को गुरु नहीं कहना चाहिए। ऐसा विचार कर ऊपर दिये हुए लक्षणों से भिन्न लक्षणों वाले गुरु की एक निष्ठ भक्ति से सेवा करनी चाहिए।।34।।

ज्ञानरहित, मिथ्या बोलने वाले और दिखावट करने वाले गुरु का त्याग कर देना चाहिए, क्योंकि जो गुरु अपनी शान्ति

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पाना नहीं जानता, वह दूसरों को क्या शान्ति दे सकेगा। पत्थरों के समूह को तैरने का ज्ञान कहाँ से हो सकता है ? जो खुद तैरना नहीं जानता, वह दूसरों को क्या तैरायेगा।। 35।।

तत्वज्ञ पुरुष संसार रूपी वृक्ष की जड़ नष्ट करने के लिए और बन्धनों की निवृत्ति करने के लिए गुरुगीता रूपी गंगा में सदा स्नान करते रहते हैं। स्वभाव से ही सर्वदा शुद्ध और पवित्र ऐसे महापुरुष जहाँ रहते हैं, वहाँ उस तीर्थ में सब देवता विचरण करते रहते हैं। जो ज्ञानी भक्त इस जगत में सर्वमय, आनन्दमय और शान्त होकर सर्वत्र विचरता है उसे सर्वज्ञ कहते हैं। ऐसा पुरुष जहाँ भी रहता है, वह स्थान पुण्यतीर्थ है। हे देवी ! तुम्हारे समक्ष मैंने जीवनमुक्त, विदेहमुक्त पुरुष के लक्षण कहे।। 36।।

गुरु ही दो नेत्र वाले शिव हैं। दो हाथ वाले भगवान विष्णु हैं और एक मुख वाले ब्रह्मा जी हैं। गुरु ही देव हैं, गुरु ही योग हैं, गुरु ही ज्ञान हैं, गुरु ही भक्ति हैं, प्रेम हैं, अर्थ हैं, धर्म हैं, काम हैं और मोक्ष हैं। गुरु में निष्ठा ही परमतप है। गुरु से अधिक कुछ भी नहीं है। गुरुभक्ति ही सर्वश्रेष्ठ तीर्थ है, अन्य तीर्थ निरर्थक हैं। गुरुदेव के चरण-कमल सर्वतीर्थमय हैं।। 37।।

गुरुदेव ही सतोगुणी होकर विष्णु रूप से जगत का पालन करते हैं। रजोगुणी होकर ब्रह्मा रूप से जगत का सृजन करते हैं और तमोगुणी होकर जगत का संहार करते हैं। मुनियों, पन्नगों और देवताओं के शाप से तथा यथाकाल आए हुए मृत्युभय से भी शिष्य को गुरुदेव बचा सकते हैं।। 38।।

हे देवी ! कल्प पर्यन्त तक के करोड़ों जन्मों के यज्ञ, व्रत, तप और शास्त्रोक्त क्रियाएँ ये सब गुरुदेव के सन्तोष मात्र से

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सफल हो जाते हैं। जिसके ऊपर गुरुदेव की कृपा नहीं, उसकी विद्या, धन, बल और भाग्य निरर्थक है। उसका अधःपतन होता है।।39।।

जिसके अन्दर गुरुभक्ति है, उसके माता, पिता और वंश धन्य हैं, उसके वंश में जन्म लेने वाले धन्य हैं। समग्र धरती माता धन्य है। शरीर, इन्द्रियाँ, प्राण, धन, बन्धु-बान्धव, माता व पिता का कुल ये सब गुरुदेव ही हैं, इसमें संशय नहीं। जिसके मुख में गुरुमन्त्र है, उसके सब कार्य सिद्ध होते हैं। गुरुदेव को सन्तुष्ट करने से शिष्य मुक्त हो जाता है। हे देवी ! गुरुदेव की कृपा से वह अणिमा आदि सिद्धियों का भोग प्राप्त करता है।।40।।

गुरु दीक्षा से विमुख रहे लोग भ्रान्त हैं। अपने वास्तविक ज्ञान से रहित हैं। वे परमतत्व को नहीं जानते, इसलिए वे पशु के समान हैं। हे प्रिये ! कैवल्य की सिद्धि के लिए गुरु का ही भजन करना चाहिए। गीता के बिना मूढ़ लोग इस परमपद को नहीं जान सकते। गुरुदेव की कृपा से हृदय की ग्रन्थि छिन्न हो जाती है, सब संशय कट जाते हैं और सब कर्म नष्ट हो जाते हैं।।41।।

वेदों और शास्त्रों के अनुसार विशेष रूप से गुरु की भक्ति करने से गुरु भक्त घोर पाप से भी मुक्त हो जाता है। गुरु प्रदत्त मन्त्र का सदा जाप करते रहना चाहिए। गुरुदेव से पृथक अन्य किसी भी देवी-देवता की भावना नहीं करनी चाहिए और गुरुदेव का नित्य स्मरण करना चाहिए।।42।।

गुरु की भक्ति करने से सभी देवी-देवताओं की पूजा स्वतः ही हो जाती है क्योंकि गुरु ही पारब्रह्म हैं। जो मानव

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अनन्य भाव से शिवस्वरूप गुरु का चिन्तन करते हैं, उनको परम पद प्राप्त करना सरल है। इस प्रकार गुरु पद सर्वश्रेष्ठ है। यह पद देवों को भी दुर्लभ है। गुरु पद हा-हा नामक और हू-हू नामक गणों द्वारा एवं गन्धर्वों द्वारा सदा पूजा जाता है।। 43।।

ऋषि, मुनि, योगी आदि सभी की यह निश्चित धारणा है कि गुरु से श्रेष्ठ कोई दूसरा तत्व नहीं है। गुरुदेव जिस वस्तु से सन्तुष्ट हों, ऐसे आसन, शयन, वस्त्र, भूषण, वाहन आदि साधक द्वारा गुरु को अर्पण करने चाहिए। मोक्ष की आकांक्षा करने वालों को अपना जीवन गुरु के चरणों में समर्पित कर देना चाहिए। साधक को अपने तीनों शरीर, पुत्र, पत्नी एवं समस्त परिवार सद्गुरु को अर्पण कर गुरुशरण का आश्रय लेना चाहिए।। 44।।

यह शरीर कृमि, कीट, भस्म, विष्ठा, मूत्र, श्लेष्मा, रक्त और मांस से भरा हुआ है और इन सबको त्वचा से ढककर सुन्दर बना दिया गया है जिसके आकर्षण और अनुराग से अपने आपको धोखा से भ्रमित होकर वासनामय जीवन बिता रहे मनुष्यों को चाहिए कि वे इस शरीर से निष्काम भाव से दूसरों की सेवा करते हुए गुरुभक्ति में लीन होकर अपना उद्धार करें।। 45।।

अज्ञान रूपी अन्धकार से अन्धे हुए जीवों के नेत्रों को ज्ञानरूपी अंजन की शलाका से जिन्होंने खोल दिया है, जिनके ज्ञान से यह समस्त जगत भिन्न-भिन्न न दिखकर केवल ब्रह्मरूप दिखाई देता है और सभी भेदभाव तथा भिन्नता समाप्त हो जाती है, पाँचों प्रकार की भ्रान्तियाँ मिट जाती हैं, उन श्रीगुरुदेव को अनन्त कोटि प्रणाम करता हूँ।। 46।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जिनके अस्तित्व से जगत का अस्तित्व है, जिनके प्रकाश से जगत प्रकाशित हो रहा है, जिनके आनन्द से सभी प्राणी आनन्दित हो रहे हैं, जिनकी प्रीति से पुत्र, पत्नी आदि प्रिय लगते हैं। शरीर, इन्द्रियाँ, मन, बुद्धि, चित्त रूपी प्रपंच जिसको प्रकाशित नहीं कर सकता, उसी प्रपंच जगत को जो चेतन बना रहा है, जिसके द्वारा जाग्रत, स्वप्न और सुषुप्ति अवस्था प्रकाशित होती हैं, उन सच्चिदानंद स्वरूप श्री गुरुदेव को नित्य निरन्तर प्रणाम करता हूँ।। 47।।

जिस प्रकार सागर में पानी, दूध में दूध, घी में घी और अलग-अलग घटों में आकाश एक और अभिन्न है, उसी प्रकार ज्ञानी सदा परमात्मा के साथ अभिन्न होकर, आनन्द विभोर होकर सर्वत्र विचरते हैं।। 48।।

।। गुरुगीता का प्रथम अध्याय समाप्त हुआ।।

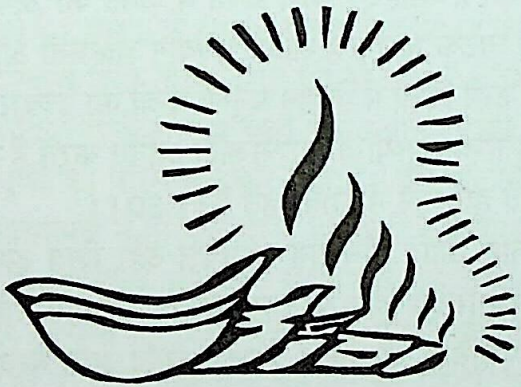

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

द्वितीय अध्याय

श्री गुरुदेव के चरण कमल 'परशिव' और 'पराशक्ति' स्वरूप हैं। श्वेत और रक्तप्रभा से युक्त हैं। मन, वाणी और चित्त से गोचर हैं। श्री गुरुचरण युगल की मैं नित्य वन्दना करता हूँ। विवेकरूपी नेत्रों के लिए श्री गुरुदेव का परम दिव्य रूप अमृत के समान है। मन्द भाग्य वाले मनुष्य उस दिव्य रूप को नहीं देख सकते; जैसे नेत्रहीन अन्धे मनुष्य सूर्य के उदय को नहीं देख सकते।।49।।

दयारूपी सागर की वृद्धि के लिए मैं हाथ जोड़कर श्री गुरुदेव को नमस्कार करता हूँ, जिनकी कृपा से सामान्य जीव भी इस विचित्र संसार से मुक्ति पा लेता है। हे प्रिये ! जिस दिशा में श्री गुरुदेव के चरण विराजते हैं उस दिशा को प्रतिदिन नमस्कार करना चाहिए। जिस दिशा में जगत की उत्पत्ति और प्रलयरूपी नाटक के नित्य साक्षी भगवान चक्रवर्ती श्री गुरुदेव जाग्रत हैं। उसी दिशा में विद्वान मनुष्य मन्त्रों का उच्चारण करते हुए ऐसे सुगन्धित पुष्पों को पुष्पांजलि अर्पित करते हैं जिन पर गुंजार करते हुए भौंरे मंडराते रहते हैं।।50।।

श्रीनाथ आदि तीन गुरु—कपिल और शिव अथवा श्री गुरुदेव, परमगुरुदेव और परात्पर गुरुदेव, गणपति, तीन पीठ, कामरूप, पूर्वगिरी, जालन्धर, मन्थान आदि आठ भैरव, सिद्धों का समूह, विरंचि चक्र, स्कन्ध आदि तीन वटुक, प्रकाश और विमर्श, शिव और शक्ति दो चरण, योन्यम्वादि दूती, अग्निमण्डल, सूर्यमण्डल, सोममण्डल आदि, दस वीर भैरव, चौंसठ योगिनी,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सर्वसंशोधनी आदि नौ मुद्रा, ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र, ईश्वर और सदाशिव, पंचवीर, 'अ' से 'क्ष' पर्यन्त इक्यावन मात्राओं से युक्त मालिनी मन्त्र—इन सबसे युक्त जो गुरुमण्डल है, उसे श्रद्धा और भक्तिपूर्वक नमस्कार करता हूँ।। 51।।

जिनके चरण रज का एक छोटा-सा कण संसार सागर से पार जाने के लिए सेतु बना देता है, जिनकी कृपा प्राप्त करके जीव महाअज्ञान का भी त्याग कर देता है और ज्ञानी हो जाता है ऐसे अपने श्री गुरुदेव को नित्य प्रणाम करता हूँ।। 52।।

श्री गुरुदेव के चरणकमल संसार के समस्त दावानल सन्तापों का विनाश कर देते हैं। श्री गुरुदेव ब्रह्मरन्ध्र में श्वेत कमल के मध्य में स्थित चन्द्रमण्डल में विराजते हैं। वहीं पर सहस्त्रदल मण्डल (सहस्त्रार चक्र) में अकथादि तीन रेखाओं से निर्मित और 'ह', 'स' वर्णों से युक्त त्रिकोण अपने श्री गुरुदेव का ध्यान करना चाहिए।। 53।।

श्री गुरुदेव की दिव्य दृष्टि समस्त चौदह भुवनों का सृजन करती है। संसार के समस्त पदार्थों का पोषण करती है। समस्त वेदशास्त्र उसी दिव्य दृष्टि का ही रूप हैं। उस दिव्य दृष्टि से भौतिक सभी सम्पदा व्यर्थ प्रतीत होने लगती हैं। वह सभी अवगुणों का परिमार्जन कर देती है। गुरु की उस दिव्य दृष्टि से आत्मतत्व में ही एक दृष्टि हो जाती है। जिससे सभी स्थूल और सूक्ष्म पदार्थ आत्मरूप ही दिखाई देने लगते हैं। वह दृष्टि संसार के गुणों की विधायिका और साधक की दृष्टि को मोक्ष मार्ग पर ही स्थिर कर देती है। उन श्री गुरुदेव को नित्य निरन्तर प्रणाम करता हूँ।। 54।।

श्री गुरुदेव की दिव्य दृष्टि समस्त लोकों के रंग-मंच की स्थापना के लिए आधारभूत स्तम्भ है, करुणा रस की वर्षा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

करती है और चौबीस तत्वों की समष्टि रूप माला के समान है। वह सभी नीति, नियमों अथवा काल की रचना करती है। वह दिव्य दृष्टि सदा मुझ में निवास करे। अग्नि में शुद्ध हुए स्वर्ण के समान चारों ओर से बुद्धि रूपी ज्वाला से शुद्ध किया हुआ, यह मन्त्रराज 'गुरु' निरन्तर मृत्यु से मेरी रक्षा करे।। 55।।

ब्रह्मरूप गुरु प्राणरूप से गतिशील है और जड़ पंचभूतों के रूप में अचर है। पंचभूत का साक्षी होने से वह हमसे दूर और पंचकोष का साक्षी होने से वह हमारे समीप है। अतः पंचभूत का स्वामी होने से सबके बाहर रहता है और पंचकोष का साक्षी होने से सभी के भीतर रहता है। ऐसे साक्षीरूप श्री गुरुदेव को नमन करता हूँ।। 56।।

जिन श्री गुरुदेव के आत्म तपोबल को वेदशास्त्र, प्रत्यक्ष, इतिहास और अनुमान इन चार प्रकार से हम समझ सकते हैं। श्री गुरुदेव को समझने के लिए उनका ज्ञान वेदशास्त्रों के उपदेशों में लक्षित होता है। श्री विग्रह के तेज को प्रत्यक्ष आँखों से देखने पर उनकी नियमित साधना और तपस्या को उनके जीवन वृत्त से, और उनके प्रभाव और ब्रह्म रूप को अनुमान से जान सकते हैं, ऐसे ब्रह्मस्वरूप श्री गुरुदेव को श्रद्धापूर्वक नित्य प्रणाम करता हूँ।। 57।।

हे देवी ! तुम्हारी साधुता को जो इस समय तुम्हारे अन्दर है उसे देखकर मैं बता रहा हूँ कि उस गुरु तत्व का मनन कैसे करना चाहिए और मनन करने पर क्या भाव उत्पन्न होता है, उसे श्रद्धापूर्वक सुनिए।। 58।।

जो गुरु मण्डलाकार समस्त विश्व में चर-अचर सभी पदार्थों में व्याप्त हो रहे हैं, जिन्होंने ब्रह्म को दिखाया है, आत्म-साक्षात्कार कराया है, जिनके चरणकमल सब वेदों के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मुकुट मणिरूप महावाक्यों से सुशोभित हो रहे हैं और जो वेदान्त रूपी कमलों को विकसित करने के लिए सूर्य के समान हैं, जो चैतन्य स्वरूप हैं, शाश्वत हैं, शान्त हैं और आकाश से परे हैं, जो अज्ञान से रहित हैं और नाद, बिन्दु कला से परे हैं, उन अस्ति-भाति-प्रिय श्री गुरुदेव को मैं बारम्बार प्रणाम करता हूँ।।59।।

श्री गुरुदेव से बढ़कर कोई तत्व नहीं है। श्री गुरुदेव की सेवा से बढ़कर कोई श्रेष्ठ तप नहीं है। ज्ञान से श्रेष्ठ कोई तत्व नहीं है। ज्ञान शक्ति से युक्त चौबीस तत्वों की माला से अलंकृत भोग और मुक्ति देने वाले श्री गुरुदेव अपने आत्मज्ञान के प्रभाव से अनेक जन्म-जन्मान्तरों के कर्मों को भस्म करने वाले मेरे स्वामी सारे जगत के स्वामी हैं। मेरे गुरुदेव तीनों लोकों के गुरु हैं। मेरी आत्मा सर्वव्यापक होने से समस्त जीवों की आत्मा है। ऐसा अनुभव कराने वाले श्री गुरुदेव आदि भी हैं और अनादि भी हैं। गुरु ही परम देवता हैं। गुरु से श्रेष्ठ कुछ भी नहीं है। ऐसे श्री गुरुनारायण देव को नित्य प्रणाम करता हूँ।।60।।

हे महादेवी ! गुरु ध्यान सभी आनन्दों को देने वाला है। सभी सुखों, भोगों और मोक्ष को देने वाला है। हृदय कमल की कर्णिका के मध्य में स्थित सिंहासन पर दिव्य मूर्ति श्री गुरुदेव विराज रहे हैं। उनका स्वरूप दिव्य है और उनमें चन्द्रकला के समान प्रकाश है। उनके एक हाथ में ज्ञान रूपी पुस्तक है और दूसरे हाथ में अभीष्ट वरदान देने वाली मुद्रा को धारण किए हुए हैं, ऐसे दिव्य रूप श्री सद्गुरुदेव का ध्यान करना चाहिए।।61।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्री गुरुदेव श्वेत वस्त्र धारण किये हुए हैं। श्वेत विलेपन, चन्दन आदि और पुष्पों की माला पहने हुए हैं। मोतियों से अलंकृत हैं। उनके दोनों नेत्र आनन्द से परिपूर्ण हैं। उनके वाम भाग में स्थित पीठिका पर उनकी दिव्य शक्ति विराजमान है। मन्द मुस्कान से युक्त गाढ़ कृपा के आगार, आनन्दस्वरूप, आनन्दप्रदाता, प्रसन्नमुख, ज्ञानस्वरूप, आत्म-बोध युक्त, योगेश्वर, स्तुति करने योग्य, संसाररूपी रोगों के वैद्य श्री गुरुदेव को साष्टांग प्रणाम करता हूँ।। 62।।

जिनमें सृष्टि, स्थिति, लय, निग्रह और अनुग्रह नामक पाँच प्रकार के कार्य नित्य प्रकट होते रहते हैं। प्रातःकाल मस्तक में श्वेत कमल में स्थित दो नेत्र और दो भुजा वाले श्रेष्ठ, अभयमुद्रा से युक्त, शान्त, सत्ता-स्फूर्ति-शान्ति स्वरूप श्री गुरुदेव का नामपूर्वक स्मरण करना चाहिए तथा '**ओम श्री आत्मानन्दाय नमो नमः**' मन्त्र का जाप करने से और उनकी मूर्ति का ध्यान करने से अपने श्री गुरुदेव की पूजा हो जाती है। फलस्वरूप अपने गुरु के सभी गुण हृदय में प्रकट होने लगते हैं। ऐसे भगवतस्वरूप श्री आत्मानन्द भगवान को कोटि-कोटि प्रणाम करता हूँ।। 63।।

स्वरूप के ज्ञान के बिना किये हुए जप-तप आदि सब कुछ नहीं किये के बराबर हैं। बालक के बकवाद के समान व्यर्थ हैं। सभी प्राणियों का स्वरूप आत्मा ही है और आत्मा ही ज्ञेय है। मन और माया एक है। निज को समझना या पहचानना ही ज्ञान है। मन को आत्मा में लय करना ही मोक्ष है। मन को आत्मा में विलीन करने के अतिरिक्त मोक्ष प्राप्ति का कोई दूसरा मार्ग नहीं है।। 64।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गुरु के बताये हुए मार्ग से मन की शुद्धि करनी चाहिए। मन और इन्द्रियों द्वारा गोचर समस्त पदार्थ और विषय अनित्य हैं, इनका त्याग करना चाहिए। अर्थात् मुमुक्षु साधक को पूर्ण वैराग्य में स्थित रहना चाहिए। गुरुदेव ही वैराग्य की योग्यता प्रदान करते हैं। ऐसे वैराग्यस्वरूप श्री गुरुदेव की नित्य वन्दना करता हूँ।।65।।

गुरु निर्मल-शान्त, साधु स्वभाव के, मितभाषी, काम और क्रोध से अत्यन्त रहित, सदाचारी और जितेन्द्रिय होते हैं। जो चतुर हों, विवेकी हों, अध्यात्म के ज्ञाता हों, पवित्र हों, निर्मल मानस वाले हों, उनमें गुरुत्व शोभा पाता है। सूचक आदि भेद से अनेक गुरु कहे गए हैं। बुद्धिमान मनुष्यों को स्वयं योग्य विचार करके तत्वनिष्ठ सद्गुरु की शरण लेनी चाहिए।।66।।

संसार अनित्य और दुःखों का घर है, ऐसा समझाकर जो गुरु वैराग्य का मार्ग बताते हैं, तत्वमसि आदि महावाक्यों का उपदेश देते हैं, संसाररूपी रोगों का निवारण करते हैं, जो सर्व प्रकार के संदेहों का जड़ से नाश करने में चतुर हैं, जन्म-मृत्यु तथा भय का विनाश करते हैं, वे सच्चे गुरु कहलाते हैं। अनेक जन्मों के पुण्यों से ऐसे महागुरु प्राप्त होते हैं, जिनको प्राप्त करके शिष्य पुनः संसार बंधन में बँधता नहीं है अर्थात् मुक्त हो जाता है।।67।।

संसार में अनेक प्रकार के गुरु होते हैं। उन सबमें ब्रह्मनिष्ठ सद्गुरु का ही सेवन सर्व प्रयत्नों से करना चाहिए। अखण्ड, एक रस, नित्यमुक्त और निरामय ब्रह्म को जो अपने अन्दर ही दिखलाते हैं, वे ही गुरु होने चाहिए। मोह आदि दोषों से रहित,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शान्त, नित्य तृप्त, किसी के आश्रय रहित, ब्रह्मा और विष्णु के वैभव को भी तृणवत समझने वाले गुरु ही परम गुरु हैं।।68।।

सर्वकाल और सर्वदेश में स्वतन्त्र, निश्चल, सुखी, अखण्ड, एक रस के आनन्द से तृप्त ही सचमुच परमगुरु हैं। द्वैत और त्रैत से मुक्त अपने अनुभव रूप प्रकाश वाले, अज्ञान रूपी अन्धकार को छेदने वाले और सर्वज्ञ ही परमगुरु हैं। जिनके दर्शनमात्र से मन प्रसन्न होता है, अपने आप धैर्य और शान्ति आ जाती है, जो अपने शरीर को शव समान समझते हैं और अपनी आत्मा को अद्वय जानते हैं। जो कामिनी और कंचन के मोह के नाशकर्ता हैं, वे सद्गुरु होते हैं। 'गुरु' नाम के जप से अनेक जन्मों के पाप नष्ट होकर मन में एकाग्रता आ जाती है।।69।।

हे पार्वती सुनो ! तत्वज्ञ दो प्रकार के होते हैं—मौनी और वक्ता। मौनी गुरु द्वारा लोगों को कोई लाभ नहीं होता, परन्तु वक्ता गुरु भयंकर संसार सागर को पार कराने में सहायक होते हैं, क्योंकि शास्त्र, युक्ति और अनुभूति से वे सर्व संशयों का छेदन कर देते हैं।।70।।

अपना कुल, धन, बल, शास्त्र, नाते-रिश्तेदार ये सब मृत्यु के समय कुछ काम नहीं आते, एक मात्र गुरुदेव ही उस समय तारणहार हैं। अपने गुरुदेव की सेवा करने से अपना कुल भी पवित्र होता है। गुरुदेव के तर्पण से ब्रह्मा आदि सब देव तृप्त होते हैं।।71।।

श्री गुरुदेव के चरणामृत का पान करने से और उसे मस्तक पर धारण करने से मनुष्य सर्व तीर्थों में स्नान करने का फल प्राप्त करता है। गुरुदेव के चरणामृत का पान करना, गुरुदेव के भोजन से बचा हुआ खाना, गुरुमूर्ति का ध्यान करना

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

और गुरुमन्त्र जाप हमेशा करते रहना चाहिए। ब्रह्मा, विष्णु और शिव सहित समस्त जगत् गुरुदेव में समाविष्ट है। गुरुदेव से अधिक कुछ भी नहीं है। यह रहस्य अत्यन्त गुप्त रहस्य है, पापियों को वह नहीं मिलता, अनेक जन्मों के किए हुए पुण्यों के परिपाक से ही मनुष्य गुरु तत्व को प्राप्त कर सकता है।।72।।

श्री गुरुदेव के प्रति अनन्य भक्ति से ज्ञान के बिना भी मोक्ष पद मिल जाता है। 'गुरु' यह दो अक्षरवाला मन्त्र सब मन्त्रों में राजा है, श्रेष्ठ है, स्मृतियाँ, वेद और पुराणों का सार है। श्री गुरुदेव का कृपा प्रसाद पाकर शिष्य को स्वयं अपने अन्दर आत्माराम को देखना चाहिए। इस प्रकार गुरु के बताये मार्ग के अनुसार अपने आपको देखने से जीव को अपने स्वरूप का ज्ञान हो जाता है। मैं ही सब हूँ, मुझमें ही सब कल्पित हैं, ऐसा ज्ञान जिनकी कृपा से हुआ है, ऐसे आत्मस्वरूप श्री गुरुदेव के चरण कमलों में नित्य निरन्तर नमन करता हूँ।।73।।

जो तिनके से लेकर ब्रह्माण्ड पर्यन्त सभी पदार्थ और जीव, स्थावर और जंगम में इसी ब्रह्मस्वरूप परमात्मा को देखते हैं जो स्वयं जगतरूप हो चुके हैं, सच्चिदानन्द स्वरूप, भेद दृष्टि शून्य, नित्य, पूर्ण, निराकार, निर्गुण और अपने स्वरूप में स्थित, हृदयाकाश के मध्य में विराजमान, शुद्ध स्फटिक मणि के समान शुद्ध और निर्मल, सदा आनन्द की वर्षा करने वाले ब्रह्मस्वरूप श्री सद्गुरुदेव का नित्य ध्यान करना चाहिए।।74।।

जब चिदाकाश में शुद्ध स्फटिक मणि प्रतिमा रूप गुरु का ध्यान करते हैं तब जैसे सामने स्फटिक मणि से निर्मित रखी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रतिमा का प्रतिबिम्ब दर्पण में दिखाई देने लगता है, उसी प्रकार बुद्धि में सद्गुरुदेव का सच्चिदानन्द ब्रह्मरूप प्रतिबिम्बित होने लगता है और प्रज्ञा में यह भाव उत्पन्न होने लगता है कि सोहम् ब्रह्म (वही ब्रह्म मैं हूँ)। इस प्रकार शिष्य तन्मय तदाकार हुआ स्वयं को चिदाकार आनन्दस्वरूप अनुभव करता है।। 75।।

साकार उपासना से निराकार का दर्शन होता है इसलिए साकार गुरुदेव के ध्यान से निराकार ब्रह्म का साक्षात्कार हो जाता है। हे पार्वती ! ब्रह्म का स्वरूप इन्द्रिय, मन, बुद्धि से दिखाई नहीं देता है, न ही उसे इनके द्वारा प्राप्त किया जा सकता है। ब्रह्म का न कोई नाम है, न रूप है, वह ब्रह्म शब्द सीमा से बाहर है, अतः निशब्द है। वह केवल चैतन्य स्वरूप है।। 76।।

चिदाकाश में ब्रह्मरूप गुरु का ध्यान करते हुए शिष्य स्वयं ब्रह्ममय हो जाता है। पिण्ड में पद के रूप में वह मुक्त है, इसमें कोई संशय नहीं। देवी पार्वती ने कहा—हे महादेव ! पिण्ड क्या है, पद किसको कहते हैं, रूप और रूपातीत क्या है ? यह सब विस्तार से बताइए।। 77।।

महादेव जी ने कहा—हे देवी ! कुण्डलिनी शक्ति को पिण्ड कहते हैं। हंस को पद कहते हैं। बिन्दु को रूप कहते हैं और निरंजन, निराकार ब्रह्म को रूपातीत कहते हैं। जिनकी कुण्डलिनी शक्ति जाग्रत हो गई हो वह पिण्ड से मुक्त हो गया, जिसका हंस पद में प्राण स्थिर हो गया, वह पद से मुक्त हो गया, जिसको आत्म प्रकाश रूप बिन्दु का दर्शन हो गया, वह रूप से मुक्त हो गया। जो निराकार-निरंजन-निर्विकल्प स्थिति में है, वही यथार्थ में मुक्त है, इसमें सन्देह नहीं।। 78।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

साधक को स्वयं सर्वमय होकर परमतत्व को देखना चाहिए। उस परमतत्व से परे कुछ भी नहीं है। यह सब निराश्रय है। उस परमतत्व का साक्षात्कार होने पर साधक श्री गुरुदेव की कृपा से निःसंग हो जाता है। एक एकाकी, आसक्त और इच्छाशून्य होकर स्थिर हो जाता है, चाहे कुछ मिले या न मिले। चाहे थोड़ा मिले या अधिक वह सन्तुष्ट चित्त से यथाप्राप्त वस्तु का उपभोग करता है, क्योंकि उसकी समस्त कामनाएँ समाप्त हो चुकी हैं और उसके सभी कार्य निष्काम भाव से ही होते हैं। ज्ञानी लोग इस अवस्था को सर्वज्ञ पद कहते हैं। इस पद को प्राप्त करके देहधारी जीव सर्वात्मय हो जाता है। वह सदा आनन्दमग्न और शान्त होकर जहाँ कहीं रमण करता रहता है, वह मुक्त पुरुष जहाँ रहता है, वह स्थान परमतीर्थ बन जाता है, वह देश पुण्य भूमि है।। 79।।

हे देवी ! गुरुमार्ग द्वारा मुक्ति देने वाला उपदेश, गुरुभक्ति तथा ध्यान आदि मैंने तुमको बताये। गुरुगीता में दिये गये उपदेश संसाररूपी सागर से उद्धार करने वाले हैं। 'गुरु' दो अक्षर वाला मन्त्र सिद्ध मन्त्र है। इस मन्त्र की ब्रह्मा, विष्णु, महेश, इन्द्र आदि देवता और नारद आदि सभी मुनि सदा पूजा करते रहते हैं। इस गुरुगीता रूपी अक्षर धाम में/तीर्थ में रमण करने से दुःख, दारिद्रय, मृत्यु भय एवं सभी भव रोग निश्चय ही नष्ट होते हैं। अपनी आत्मा में रमण कराने वाली इस सर्वश्रेष्ठ गुरुगीता रूपी महात्म्य को मैं कोटि-कोटि नमन करता हूँ।। 80।।

।। गुरुगीता का द्वितीय अध्याय समाप्त हुआ।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तृतीय अध्याय

गुरुगीता के पाठ करने का फल

इस गुरुगीता का पाठ सब पापों का शमन करता है। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति कराता है। इसके पाठ से जो भी आकांक्षा की जाती है, वह अवश्य सिद्ध होती है। यदि कोई इस गुरुगीता को लिखकर उसकी पूजा करे तो उसे लक्ष्मी और मोक्ष की प्राप्ति होती है और उसके हृदय में विशेषकर सदा सर्वदा गुरुभक्ति उत्पन्न होती रहती है। शक्ति के, सूर्य के, गणपति के, विष्णु के और शिव के मतवादी इस गुरुगीता का पाठ करते हैं।। 81।।

जप से जय प्राप्त होता है। जपानुष्ठान काल में सब नीच कर्म और निन्दित स्थान का त्याग करना चाहिए। श्मशान में, बिल्व वृक्ष, कनक वृक्ष के नीचे और आम्र वृक्ष के पास जप करने से सिद्धि जल्दी होती है। जो कोई इस गुरुगीता का पाठ लौकिक कार्य के लिए करेगा, वह ज्ञानहीन होकर संसाररूपी सागर में गिरेगा। यदि ज्ञानभाव से किसी कार्य में इसका उपयोग किया जायेगा, वह कर्म निष्कर्म में परिणत होकर शान्त हो जायेगा।। 82।।

भक्तिभाव से इस गुरुगीता का पाठ करने से, सुनने से और लिखने से वह सब भक्त सब फल भोगता है। हे देवी ! इस गुरुगीता को नित्य भावपूर्वक हृदय में धारण करो। महा-व्याधि वाले दुःखी लोगों को सदा आनन्द से इसका जप पाठ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

करना चाहिए। गुरुगीता के जप से अनन्त फल मिलता है। गुरुगीता सर्वपापों को हरने वाली है और सर्व दारिद्रय का नाश करने वाली है। इसका पाठ अकाल मृत्यु को रोकता है। सर्व संकटों का नाश करता है, यक्ष, राक्षस, भूत, चोर और शेर का घात करने वाला है।। 83।।

गुरुगीता सब प्रकार के उपद्रवों, कुष्ठ आदि दुष्ट रोगों और दोषों का निवारण करने वाली है। श्री गुरुदेव के सानिध्य में जो फल मिलता है, वह फल इस गुरुगीता का पाठ करने से मिलता है। इस गुरुगीता का पाठ करने से सर्व ऐश्वर्य और सिद्धियों की प्राप्ति होती है। मोहन एवं वशीकरण में इसका पाठ स्वयं करना चाहिए।। 84।।

इस गुरुगीता का पाठ करने वाले पर सब प्राणी मोहित होते हैं, बन्धन में से परम मुक्ति मिलती है। देवराज इन्द्र को वह प्रिय होता है और राजा उसके वश में होता है। इसका पाठ शत्रु का मुख बन्द करने वाला है। दुष्कृत्यों का नाश करने वाला है और सत्कर्म में सिद्धि देने वाला है।। 85।।

इसका पाठ असाध्य कार्यों की सिद्धि कराता है, नवग्रहों का भय हरता है। दु:स्वप्नों का नाश करता है और सुस्वप्नों के फल की प्राप्ति कराता है। यह गुरुगीता रूपी शास्त्र मोह को शान्त करने वाला, बन्धन में से परम मुक्ति देने वाला और स्वरूप ज्ञान का भण्डार है।। 86।।

आसन पर बैठे हुए या लेटे हुए, खड़े रहते या चलते हुए, हाथी या घोड़े पर सवार, जाग्रत या सुषुप्त अवस्था में जो पवित्र ज्ञानवान पुरुष इस गुरुगीता का जप पाठ करता है, वह शीघ्र ही

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पुनर्जन्म से मुक्त हो जाता है। बिना आसन किये हुए जप, तप, नीच कर्म हो जाता है और निष्फल हो जाता है। यात्रा में, युद्ध में, शत्रुओं के उपद्रव में गुरुगीता का जप करने से विजय मिलती है। मरणकाल में जप करने से मोक्ष मिलता है। गुरु-शिष्य के सर्व कार्य सिद्ध होते हैं।। 87।।

कुश और दूर्वा के आसन पर सफेद कम्बल बिछाकर उसके ऊपर बैठकर एकाग्रमन से गुरुगीता का जप करना चाहिए। सामान्यतः सफेद आसन उचित है, परन्तु वशीकरण में लाल आसन आवश्यक है। हे प्रिये ! शान्ति की प्राप्ति के लिए या वशीकरण में नित्य पद्मासन में बैठकर जप करना चाहिए।। 88।।

कपड़े के आसन पर बैठकर जप करने से दारिद्रय, पत्थर के आसन पर रोग, भूमि पर बैठकर जप करने से दुःख और लकड़ी के आसन पर किये हुए जप-तप निष्फल होते हैं। काले मृगचर्म और दर्भासन पर जप करने से ज्ञान सिद्धि, व्याघ्रचर्म पर जप करने से मुक्ति तथा कम्बल के आसन पर जप करने से सर्व सिद्धि प्राप्त होती हैं।। 89।।

अग्नि कोण की तरफ मुख करके जप करने से आकर्षण, वायव्य कोण की तरफ मुख करने से शत्रुओं का नाश, नैर्ऋत्य कोण की तरफ दर्शन और ईशान कोण की तरफ मुख करके जप पाठ करने से ज्ञान की प्राप्ति होती है।। 90।।

उत्तर दिशा की ओर मुख करके पाठ करने से शान्ति, पूर्व दिशा की ओर वशीकरण, दक्षिण दिशा की ओर मारण सिद्धि तथा पश्चिम दिशा की ओर जप पाठ करने से धन की प्राप्ति होती है।। 91।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सागर या नदी के तट पर, तीर्थ में, शिवालय में, विष्णु के या देवी के मन्दिर में, गौशाला में, सभी शुभ देवालयों में, वटवृक्ष या आंवले के वृक्ष के नीचे, मठ में, तुलसीवन में, पवित्र निर्मल स्थान में नित्य अनुष्ठान के रूप में अनासक्त होकर मौनपूर्वक इसके जप का आरम्भ करना चाहिए।। 92।।

भाग्यहीन, शक्तिहीन और गुरुसेवा से विमुख जो लोग इस उपदेश को नहीं मानते, वे घोर नरक में पड़ते हैं। दुर्जनों का संग त्यागकर पाप कर्म छोड़ देने चाहिए। जिसके चित्त में ऐसा चिन्ह देखा जाता है, उसके लिए गुरुदीक्षा का विधान है।। 93।।

चित्त का त्याग करने में जो प्रयत्नशील हैं, क्रोध और गर्व से रहित हैं, द्वैत भाव का जिसने त्याग किया है, जिसका जीवन इन लक्षणों से युक्त हो, निर्मल हो, सब जीवों के कल्याण में रत हो, उसके लिए गुरुदीक्षा का विधान है।। 94।।

हे देवी ! जिसका चित्त अत्यन्त परिपक्व हो, श्रद्धा और भक्ति से युक्त हो, उसे यह तत्व सदा मेरी प्रसन्नता के लिए कहना चाहिए। सत्कर्म के परिपाक से शुद्ध हुए चित्त वाले बुद्धिमान साधक को ही गुरुगीता प्रयत्नपूर्वक कहनी चाहिए। नास्तिक, कृतघ्न, दंभी, शठ, अमकृ और विरोधी को यह गुरुगीता कदापि नहीं कहनी चाहिए।। 95।।

एकाक्षर मन्त्र का उपदेश देने वाले को जो गुरु नहीं मानता, वह सौ जन्मों में कुत्ता होकर फिर चाण्डाल की योनि में जन्म लेता है। गुरु का त्याग करने से मृत्यु होती है और मन्त्र को छोड़ने से दरिद्रता आती है। गुरु और मन्त्र दोनों का त्याग करने से रौरव (घोर) नरक मिलता है।। 96।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शिव के क्रोध से गुरुदेव रक्षण करते हैं लेकिन गुरु के क्रोध से कोई रक्षण नहीं कर सकता। अतः सब प्रयत्न से गुरुदेव की आज्ञा का उल्लंघन नहीं करना चाहिए। हे देवी ! भव दुःख का नाश करने वाली इस गुरुगीता का पाठ गुरुदीक्षा विहीन मनुष्यों के आगे कभी नहीं करना चाहिए।। 97।।

गुरुगीता वन्ध्या स्त्री को सुपुत्र देने वाली तथा सधवा स्त्रियों के वैधव्य का निवारण करने वाली है। कोई विधवा निष्काम भाव से इसका जप पाठ करे तो उसे मोक्ष की प्राप्ति होती है। यदि वह विधवा सकाम होकर जप करे तो उसे अगले जन्म में सन्ताप हरने वाला अवैधव्य प्राप्त होता है। उसके सब दुःख, भय, विघ्न और सन्ताप का नाश होता है।।98।।

गुरुगीता, आयुष्य, आरोग्य, ऐश्वर्य और पुत्र-पौत्र की वृद्धि करने वाली है। व्यक्ति जो-जो अभिलाषा करके इसका पठन-चिन्तन करता है, वह उसे निश्चय ही प्राप्त होता है। यह गुरुगीता नित्य सौभाग्य और पुण्य प्रदान करने वाली है तथा तीनों तापों का शमन करके सब प्रकार की शान्ति देने वाली है।।99।।

गुरुगीता के समान कोई स्तोत्र नहीं है। गुरु के समान कोई तत्व नहीं है। समग्र धर्म का सार मैंने कहा, यही सत्य है। सर्वश्रेष्ठ तप यही है कि उपास्य देव एक ही हो, एक ही धर्म हो और एक में ही निष्ठा हो। गुरु से श्रेष्ठ अन्य कोई भी नहीं है। एकमात्र देव 'गुरु' हैं। गुरु सेवा ही एकमात्र धर्म है। गुरुभक्ति ही एकमात्र निष्ठा है। सात करोड़ महामंत्र विद्यमान हैं। 'गुरु' नाम का दो अक्षर वाला मन्त्र ही एकमात्र मन्त्र है। गुरुगीता का

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एक-एक अक्षर मन्त्रराज है, अन्य जो विविध मन्त्र हैं, वे इसका सोलहवाँ भाग भी नहीं हैं।। 100।।

इस गुरुगीता का पाठ कामना करने वालों को कामधेनु, कल्पना करने वालों को कल्पवृक्ष तथा चिन्तकों को चिन्तामणि है। इस प्रकार गुरुगीता का पाठ सभी प्रकार के मंगलों को करने वाला है।। 101।।

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्ण मुदच्यते पूर्णस्य
पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते।।

ॐ शान्तिः ! शान्तिः !! शान्तिः !!!

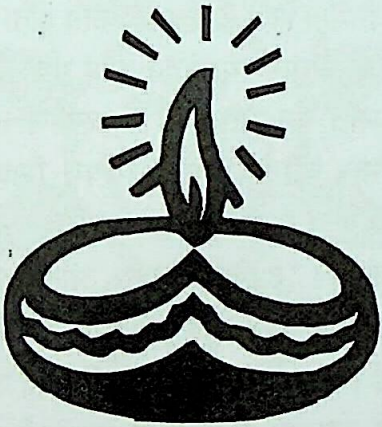

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding by IKS/MoE. Scan Client-2

स्वामी आत्मानन्द जी महाराज की आनन्द वर्षिणी वाणी

मानव जीवन का उद्देश्य है—आत्मानुभूति। आत्मा ही परमात्मा है। नित्य शुद्ध-नित्य बुद्ध-नित्य मुक्त-नित्य तृप्त-नित्य निर्द्वन्द्व-नित्य निश्चिंत-नित्य निरंजन ब्रह्म ही तू है। निराकार-निर्विकार-निर्विशेष- निरामय-निराभास-निरालम्ब-निर्विकल्प-निरपेक्ष-निर्गुण हरि तू है। ऐसा चित्त में निरन्तर चिन्तन कर, इससे हाथ में रखे हुए आम के समान तत्व बोध हो जाएगा। बुरे कर्मों को जहर के समान त्याग दे। कर्तव्य कर्मों को निष्काम भाव से कर। फल की इच्छा छोड़कर उपासना कर। इससे अन्तःकरण निर्मल होता है, चित्त एकाग्र होता है। अवगुणों को काक-विष्ठा के समान त्याग दे। शुभ गुणों का अमृतवत पान कर, यह उन्नति का साधन है। कल्याण का साधन है ब्रह्मज्ञान। देहाभिमान को त्यागकर 'सत्यम् शिवम् सुन्दरम्' निज रूप का अनुभव कर। त्रिगुणमयी माया को तृण के समान तुच्छ भाव से छोड़ दे। 'शान्तम् शिवम् अद्वितीयम्' तत्व के साथ एक हो जा। जैसे बहती हुई सरिताएँ नाम रूप छोड़कर सागर में बिना कोई विकार पैदा किये समाहित हो जाती हैं। वैसे ही तू सच्चिदानन्द भगवान में लीन हो जा। जीवन मुक्ति के विलक्षण आनन्द में मानव जीवन को सफल कर धन्य हो जा, कृतार्थ हो जा, विमुक्त हो जा। यदि पापों से तापों से छूटना चाहता है तो स्वयं प्रकाश, स्वयं सिद्ध, स्वतः सिद्ध ईश्वर की शरण ग्रहण कर। उठ जाग महापुरुषों को प्रात कर आत्म-तत्व

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

Digitized by Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha, Digitized by eGangotri

को जान। तत्व ज्ञान को छोड़कर परम कल्याण का कोई दूसरा मार्ग है ही नहीं। परमात्मा ही परमात्मा है, नानात्व रंच मात्र भी नहीं। यह वैदिक धर्म का अनमोल, अकाट्य, अक्षय, अभय और अमृतरूप सिद्धान्त है।

ॐ सहनाभवतु सहनौभुनक्तु सहवीर्यं करवावहै-
तेजस्विना व धीतमस्तु मा विद्वषावाहै।
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आरती-1

सदगुरु तेरे चरणों की पग धूल जो मिल जाये।
सच कहता हूँ दाता तकदीर बदल जाये।।

यह मन बड़ा चंचल है, तेरा ध्यान नहीं करता।
जितना इसे समझाऊँ उतना ही मचल जाये।।
सदगुरु तेरे चरणों की पग धूल जो मिल जाये।

चरणों में तेरे दाता नित बरसती है रहमत।
एक बूँद जो मिल जाये, दिल की कली खिल जाये।।
सदगुरु तेरे चरणों की पग धूल जो मिल जाये।

नजरों से गिराना न चाहे जो भी सजा देना।
नजरों से जो गिर जाऊँ मुश्किल है सँभल पाना।
सद्गुरु तेरे चरणों की पग धूल जो मिल जाये।

गुरुदेव मेरे प्यारे बस इतनी कृपा करना।
दरबार में जब आऊँ तेरा दर्शन हो जाये।।
सद्गुरु तेरे चरणों की पग धूल जो मिल जाये।।
सच कहता हूँ दाता तकदीर बदल जाये।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आरती-2

गुरु आशीष दो ऐसा कहीं पग डगमगायें न।
सत्य की राह से हटकर कहीं हम दूर जायें न।।
पाप और पुण्य की गठरी हमारे सामने रखी।
सीख ऐसी हमें देना गलत गठरी उठाये न।।
गुरु आशीष दो ऐसा कहीं पग डगमगायें न।

अमीरी और गरीबी से हमारा वास्ता कैसा।।
यह माया मोह का बन्धन किसी के साथ जाये न।
गुरु आशीष दो ऐसा कहीं पग डगमगायें न।।

हमारे मन में गीता के सभी उपदेश भर देना।
ज्ञान हो कर्म का प्रतिफल कि हम आशा मनाए न।।
गुरु आशीष दो ऐसा कहीं पग डगमगायें न।

गुरु चरणों में नतमस्तक रहूँ ऐसी तमन्ना है।
जान जाये भले ही पर गुरुजी की आन जाये न।
गुरु आशीष दो ऐसा कहीं पग डगमगायें न।
सत्य की राह से हटकर कहीं हम दूर जायें न।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आरती-3

ॐ जय गुरुदेव दयानिधि दीनन हितकारी।
जय-जय मोह विनाशक भव बन्धनहारी।। ॐ जय....
ब्रह्मा, विष्णु, सदाशिव गुरु मूरत धारी।
वेद पुराण बखानत, गुरु महिमा भारी।। ॐ जय....
जप-तप तीरथ संयम दान विविध दीने।
गुरु बिन ज्ञान न होवे, कोटि यतन कीन्हे।। ॐ जय....
माया मोह नदी जल जीव बहे सारे।
नाम जहाज बिठाकर गुरु पल में तारे।। ॐ जय....
काम, क्रोध, मद, मत्सर, चोर बड़े भारे।
ज्ञान खड्ग दे कर में गुरु सब संहारे।। ॐ जय....
नाना पंथ जगत में निज-निज गुण गावें।
सबका सार बताकर, गुरु मारग लावें।। ॐ जय....
गुरु चरणामृत निर्मल, सब पातक हारी।
वचन सुनत तम नाशे, सब संशय हारी।। ॐ जय....
तन मन धन सब अर्पण, गुरु चरणन कीजे।
ब्रह्मानन्द परम पद, मोक्ष गति लीजे।। ॐ जय....
ॐ जय गुरुदेव दयानिधि-दीनन हितकारी।
जय-जय मोह विनाशक भव बन्धन हारी।। ॐ जय....

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आरती-4

गुरुदेव हमको देना सहारा,
कहीं छूट जाये न दामन तुम्हारा।।
चमकते हैं दुनिया में जो चाँद-तारे।
तेरी ज्योति से ज्योति लेते हैं सारे।
घुमाता है उनको तेरा ही सहारा।
कहीं छूट जाये न दामन तुम्हारा।।
बराबर न तेरे और कोई दूजा।
गुरुदेव जिसकी मैं करूँ पूजा।।
तुम्हीं मेरी नैया हो, तुम्हीं हो किनारा।
कहीं छूट जाये न दामन तुम्हारा।।
देखूँ न दुनिया का झूठा पसारा।
कहीं छूट जाये न दामन तुम्हारा।।

तेरे गीत हरदम गाता रहूँ मैं।
निरन्तर गुरुजी को ध्याता रहूँ मैं।।
गुरु नाम मुझको है प्राणों से प्यारा।
कहीं छूट जाये न दामन तुम्हारा।।

करुणा के सागर प्रभु करुणा बहा दो।
अपनी दया की दृष्टि सब पर बरसा दो।।
सुख से रहे भक्त मण्डल तुम्हारा।
गुरुदेव हमको देना सहारा।
कहीं छूट जाये न दामन तुम्हारा।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गुरु वन्दना-1

त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वम मम देव देव।।

कर्पूरगौरं करुणावतारं, संसारसारं भुजगेन्द्रहारम्।
सदावसन्तं हृदयारविन्दे, भवं भवानी सहितं नमामि।

गुरुर्ब्रह्मा, गुरुर्विष्णु, गुरुर्देवो महेश्वरः
गुरुर्साक्षात् परमब्रह्म, तस्मै श्री गुरुवे नमः।

ध्यानमूलं गुरुमूर्ति, पूजामूलं गुरुर्पदम।
मन्त्रमूलं गुरुर्वाक्यं, मोक्षमूलं गुरुर्कृपा।

असतो मा सदगमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय
मृर्त्योमा अमृतगमय, आविराबिर्मयेधि
सर्वेषां शान्तिर भवतु सर्वेषां स्वस्ति भवतु
सर्वेषां मंगलं भवतु, सर्वेषां पूर्णं भवतु

सर्वेभवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया
सर्वेभद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित दुःखभागभवेत्।

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते।।

ॐ शान्ति ! शान्ति !! शान्ति !!!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गुरु वन्दना-2

सदगुरु देवन देव वरं, निज भक्तन रक्षण देह धरं।
पर दुःख हरं, सुख शान्ति करं, निरुपाधि निरामय दिव्यपरम।।
जय काल अबाधित शान्तिमयं, जन पोषक शोषक ताप त्रयं।
भय भंजन देत परम अभयं, मन रंजन भाविक भाव प्रियं।।
ममतादिक दोष नशावत हैं, शम आदिक भाव सिखावत हैं।
जग जीवन पाप निवारत हैं, भव सागर पार उतारत हैं।।
कहुँ धर्म बतावत ध्यान कहीं, कहुँ भक्ति सिखावत ज्ञान कहीं।
उपदेशत नेम अरु प्रेम तुम्हीं, करते प्रभु योग अरु क्षेम तुम्हीं।।
मन इन्द्रिय जाही न जान सके, नहीं बुद्धि जिसे पहचान सके।
नहीं शब्द जहाँ पर जाय सके, बिन सदगुरु कौन लखाय सके।।
नहीं ध्यान न ध्याता न ध्येय जहाँ, नहीं ज्ञाता न ज्ञान न ज्ञेय जहाँ।
नहीं देश न काल न वस्तु तहाँ, बिन सदगुरु को पहुँचाये वहाँ।।
नहीं रूप न लक्षण ही जिसका, नहीं नाम न धाम कहीं जिसका।
नहीं सत्य असत्य कहाय सके, गुरुदेव ही ताही जनाय सके।।
गुरु कीन कृपा भव त्रास गई, मिट भूख गई छूट प्यास गई।
नहीं काम रहा न कर्म रहा, नहीं मृत्यु रहा न जन्म रहा।।
भग राग गया, हट द्वेष गया, अधचूर्ण भया अणु पूर्ण भया।
नहीं द्वैत रहा सम एक भया, भ्रम भेद मिटा मम तोर गया।।
नहीं मैं नहीं तू नहीं, अन्य रहा, गुरु शाश्वत आप अनन्य रहा।
गुरु सेवत ते नर धन्य यहाँ तिनको नहीं दुःख यहाँ न वहाँ।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सद्गुरु स्तुति

सदगुरु जिनका नाम है पावन जिनका धाम है।
ऐसे सदगुरु देव को बारम्बार प्रणाम है।
ऐसे 'आत्मानन्द' को अनन्त-अनन्त प्रणाम है।
वैराग्य जिनकी ढाल है, ज्ञान की तलवार है
ऐसे ब्रह्मानन्द को बारम्बार प्रणाम है।
ऐसे 'महानन्द' को अनन्त-अनन्त प्रणाम है।
वाणी सूर्य समान है नाशत तम अज्ञान है
ऐसे परमानन्द को बारम्बार प्रणाम है।
ऐसे सत्यानन्द को अनन्त-अनन्त प्रणाम है।
सदगुण को जो भरते हैं, अवगुण को जो हरते हैं
ऐसे चिदानन्द को बारम्बार प्रणाम है।
ऐसे प्रेमानन्द को अनन्त-अनन्त प्रणाम है।
करुणा जिनकी दृष्टि है अमृतमयी वृष्टि है
ऐसे असीमानन्द को बारम्बार प्रणाम है।
ऐसे परानन्द को अनन्त-अनन्त प्रणाम है।
सतचित आनन्द है अस्ति भाति प्रिय हैं,
ऐसे अभयानन्द को बारम्बार प्रणाम है।
ऐसे असंगानन्द को अनन्त-अनन्त प्रणाम है।
पुण्यों को बढ़ाते हैं, पापों को हटाते हैं
ऐसे आत्मदेव को बारम्बार प्रणाम है।
ऐसे भूमानन्द को अनन्त-अनन्त प्रणाम है।
अलक, झलक, पुलक हैं सत्ता-स्फूति-शान्ति हैं

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ऐसे नित्यानन्द को बारम्बार प्रणाम है।
ऐसे सच्चिदानन्द को अनन्त-अनन्त प्रणाम है।
चिन्ता को मिटाते हैं भक्ति ज्ञान बढ़ाते हैं
ऐसे अद्वैत देव को बारम्बार प्रणाम है।
ऐसे एकोदेव को अनन्त-अनन्त प्रणाम है।
सत्यं ज्ञानं अनन्त है, शुद्ध बुद्ध मुक्त हैं
ऐसे कृष्णदेव को बारम्बार प्रणाम है।
ऐसे रामदेव को अनन्त-अनन्त प्रणाम है।
सत्य शिव सुन्दर हैं शान्त शिव अद्वैत हैं
ऐसे इष्टदेव को बारम्बार प्रणाम है
ऐसे सदगुरु देव को अनन्त-अनन्त प्रणाम है।

ईश्वर प्रार्थना

हे पूरन परमात्मा, पावन हो जीवात्मा।।
विश्व बने धर्मात्मा, पापों का हो खात्मा।।
कामों का हो खात्मा, क्रोधों का हो खात्मा।।
लोभ का हो खात्मा, मोहों का हो खात्मा।।
हे पूरन परमात्मा, हे चेतन परमात्मा।।
हे प्रकाश परमात्मा, हे नित्य परमात्मा।।
हे सत्य परमात्मा, हे तत्व परमात्मा।।
पावन हो जीवात्मा, विश्व बने शुद्धात्मा।।
हम सब तेरी आत्मा, तापों का हो खात्मा।।
राग का हो खात्मा, द्वेष का हो खात्मा।।
भयों का हो खात्मा, हम सब तेरी आत्मा।।
हे पूरन परमात्मा, हे परम परमात्मा।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हे मोहन परमात्मा, हे दिव्य परमात्मा।।
हे भूमा परमात्मा, पावन हो जीवात्मा।।
विश्व बने धर्मात्मा, सुखी रहे सब आत्मा।।
विश्व बने पुण्यात्मा, पापों का हो खात्मा।।
विश्व बने महात्मा, लोभों का हो खात्मा।।
हे अद्वैत परमात्मा, द्वैत का हो खात्मा।।
हे अभेद परमात्मा, भेद का हो खात्मा।।
हे एक परमात्मा, अनेक का हो खात्मा।।
हे असीम परमात्मा, हे अनादि परमात्मा।।
हे अनन्त परमात्मा, हे महान परमात्मा।।
आलस्य का हो खात्मा, प्रमाद का हो खात्मा।।
अज्ञान का हो खात्मा, दुःखों का हो खात्मा।।
सुखी रहें सब आत्मा, हम सब तेरी आत्मा।।

भजन

सच्चिदानन्द तू नित्य निर्द्वन्द्व तू जीव माना।
माया में हो गया दीवाना, काया में हो गया दीवाना।।
छाया में हो गया दीवाना।
अविनाशी होकर जन्मा मरा है,
रस्सी को साँप जान बहुत डरा है।
यही महान भूल है, यही परमशूल है, यूँ डराना
मिथ्या जगत को सच्चा माना, मिथ्या सपना को सच्चा जाना
असत में हो गया दीवाना, अनित्य में हो गया दीवाना।
आलस्य में हो गया दीवाना।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सच्चिदानन्द तू नित्य निर्द्वन्द्व तू जीव माना
माया में हो गया दीवाना, काया में हो गया दीवाना
तेरी माया तुझको रिझाती, खेल रच-रचके तुझे भरमाती
खेल रच-रच के तुझको रिझाती
खेल खिलता है, दुःख मिलता है, न अघाना
चाहे मरुस्थल के जल में नहाना
चाहे मृग मारीचिका में नहाना
सच्चिदानन्द तू नित्य निर्द्वन्द्व तू जीव माना
अविद्या में हो गया दीवाना, मोह में हो गया दीवाना
माया में हो गया दीवाना, ममता में हो गया दीवाना
मानव जीवन मोती सिपाही-मानव जीवन हीरा सिपाही
अभी मौका है कर ले कमाई,
मन को दर्पण बना, देख स्वरूप अपना जो पुराना
यदि आत्मानन्द को पाना, यदि ब्रह्मानन्द को पाना
सच्चिदानन्द तू नित्य निर्द्वन्द्व तू जीव माना
माया में हो गया दीवाना, काया में हो गया दीवाना
नामों में हो गया दीवाना, रूपों में हो गया दीवाना
अपने अज्ञान से भरमाया, शेर होकर भ्या भ्या मचाया
मेरा घरबार है, मेरा परिवार है ये खजाना
सीपी को चाँदी जान लुभाना, ब्रह्म को जगत जान लुभाना
सच्चिदानन्द तू नित्य निर्द्वन्द्व तू जीव माना
जगत में हो गया दीवाना, रागों में हो गया दीवाना
अज्ञान में हो रहा दीवाना, पापों में हो रहा दीवाना।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कीर्तन

ब्रह्मा रूपा जय गुरुदेवा, विष्णु रूपा जय गुरुदेवा।
महेश स्वरूपा जय गुरुदेवा, गणेश स्वरूपा जय गुरुदेवा।
हनुमत रूपा जय गुरुदेवा, राम स्वरूपा जय गुरुदेवा।
कृष्ण स्वरूपा जय गुरुदेवा, शिवजी रूपा जय गुरुदेवा।
आत्मानन्द रूपा, जय गुरुदेवा.....

सरस्वती रूपा जय गुरुदेवा, लक्ष्मी रूपा जय गुरुदेवा।
पार्वती रूपा जय गुरुदेवा, सीता रूपा जय गुरुदेवा।
राधा रूपा जय गुरुदेवा, मीरा रूपा जय गुरुदेवा।
दुर्गा रूपा जय गुरुदेवा, काली रूपा जय गुरुदेवा।
भगवती रूपा जय गुरुदेवा, शक्ति रूपा जय गुरुदेवा।
सन्मयी रूपा जय गुरुदेवा,
चिन्मयी रूपा जय गुरुदेवा।
आनन्दमयी रूपा जय गुरुदेवा
आत्मानन्द रूपा जय गुरुदेवा।
ओंकार रूपा जय गुरुदेवा।

विराट स्वरूपा जय गुरुदेवा, सूत्रात्मा रूपा जय गुरुदेवा।
ईश्वर रूपा जय गुरुदेवा, ब्रह्म स्वरूपा जय गुरुदेवा।
आकाश स्वरूपा जय गुरुदेवा, जल-वायु रूपा जय गुरुदेवा।
अग्नि रूपा जय गुरुदेवा, सूर्य स्वरूपा जय गुरुदेवा।
चन्द्रस्वरूपा जय गुरुदेवा, तारे रूपा जय गुरुदेवा।
आत्मानन्द रूपा जय गुरुदेवा।

निराकार रूपा जय गुरुदेवा, निर्विकार रूपा जय गुरुदेवा।
निर्विशेष रूपा जय गुरुदेवा, निर्विकल्प रूपा जय गुरुदेवा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

निराश्रय रूपा जय गुरुदेवा, निरालम्ब रूपा जय गुरुदेवा।
निरन्जन रूपा जय गुरुदेवा, निर्द्वन्द्व रूपा जय गुरुदेवा।
निर्गुण रूपा जयगुरुदेवा, अद्वैत स्वरूपा जय गुरुदेवा।
असंग स्वरूपा जय गुरुदेवा, अचल स्वरूपा जय गुरुदेवा।
अखण्ड स्वरूपा जय गुरुदेवा, अद्वितीय रूपा जय गुरुदेवा।
अकेला रूपा जय गुरुदेवा, आनन्द स्वरूपा जय गुरुदेवा।
महानन्द रूपा जय गुरुदेवा, अवधूत रूपा जय गुरुदेवा।
आत्मानन्द रूपा जय गुरुदेवा।
ब्रह्म प्रकाश रूपा जय गुरुदेवा।
सन्त स्वरूपा जय गुरुदेवा, महात्मा रूपा जय गुरुदेवा।
ध्यान स्वरूपा जय गुरुदेवा, समाधि रूपा जय गुरुदेवा।
शंकर रूपा जय गुरुदेवा, आत्मानन्द रूपा जय गुरुदेवा।
अजन्मा रूपा जय गुरुदेवा, मृत्युन्जय रूपा जय गुरुदेवा।
गायत्री रूपा जय गुरुदेवा, मन्त्र स्वरूपा जय गुरुदेवा।
जगत स्वरूपा जय गुरुदेवा, जगन्नाथ रूपा जय गुरुदेवा।
साक्षी रूपा जय गुरुदेवा, सृष्टा रूपा जय गुरुदेवा।
आस्ति भाति प्रिय रूपा, जय गुरुदेवा।
अलक-झलक-पुलक रूपा जय गुरुदेवा।
सत्-चित्-आनन्द रूपा जय गुरुदेवा।
रामायण रूपा जय गुरुदेवा, गीता रूपा जय गुरुदेवा।
भागवत रूपा जय गुरुदेवा, वेद स्वरूपा जय गुरुदेवा।
ज्ञान स्वरूपा जय गुरुदेवा, ज्ञानी रूपा जय गुरुदेवा।
आत्मानन्द रूपा जय गुरुदेवा।
सोहम रूपा जय गुरुदेवा परमहंस रूपा जय गुरुदेवा।
सनातन रूपा जय गुरुदेवा, पुरातन रूपा जय गुरुदेवा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नवीन रूपा जय गुरुदेवा,
अवतार रूपा जय गुरुदेवा।
योगी रूपा जय गुरुदेवा
योगेश्वररूपा जय गुरुदेवा, ज्ञानेश्वर रूपा जय गुरुदेवा।
महेश्वर रूपा जय गुरुदेवा।
आत्मानन्द रूपा जय गुरुदेवा।
मंगल रूपा जय गुरुदेवा, मोक्ष स्वरूपा जय गुरुदेवा।
कल्याण स्वरूपा जय गुरुदेवा, भाग्य स्वरूपा जय गुरुदेवा।
विधाता रूपा जय गुरुदेवा, एकनाथ रूपा जय गुरुदेवा।
जीवनाथ रूपा जय गुरुदेवा, भोले नाथ रूपा जय गुरुदेवा।
गोरखनाथ रूपा जय गुरुदेवा, विश्वनाथ रूपा जय गुरुदेवा।
आदिनाथ रूपा जय गुरुदेवा, शान्तिनाथ रूपा जय गुरुदेवा।
आत्मानन्द रूपा जय गुरुदेवा।
दाता रूपा जय गुरुदेवा, दयालु रूपा जय गुरुदेवा।
कृपालु रूपा जय गुरुदेवा, सिद्ध स्वरूपा जय गुरुदेवा।
बुद्ध स्वरूपा जय गुरुदेवा, मौनी रूपा जय गुरुदेवा।
फक्कड़ रूपा जय गुरुदेवा, ऐश्वर्य स्वरूपा जय गुरुदेवा।
आत्मानन्द रूपा जय गुरुदेवा।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding IKS

शुद्ध ब्रह्म

विराट

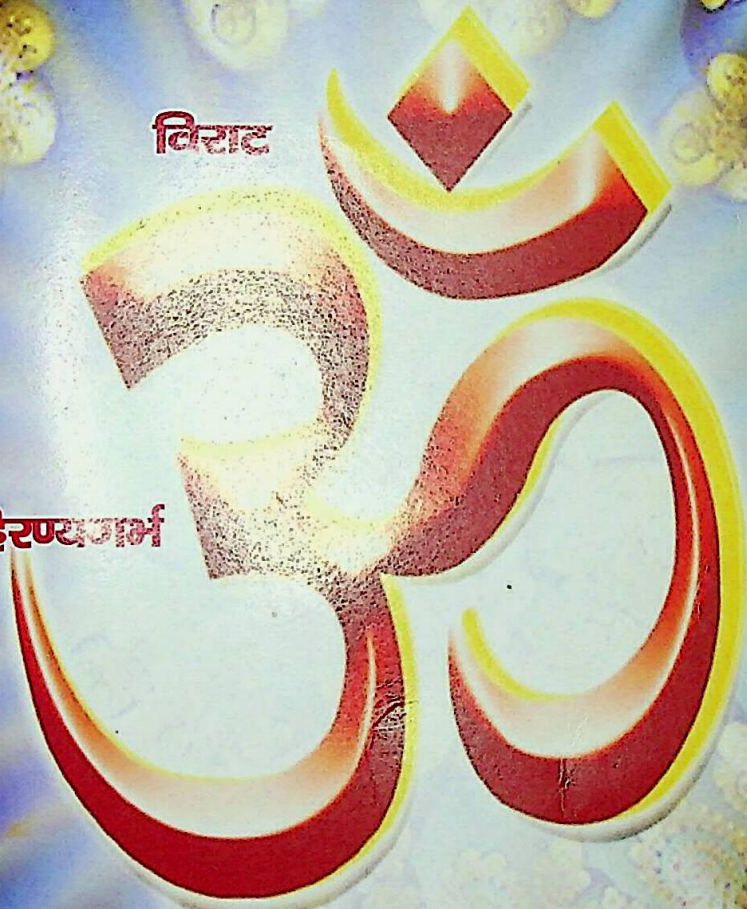

हिरण्यगर्भ

ईश्वर

Rai... Nath, Shiv... Varanasi Collection... ment: Heritage Foun...
s.com

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ब्रह्म स्तुति

सत्यं शिवं सुन्दरं ब्रह्म ।
शान्तं शिवं अद्वैतं ब्रह्म ।।
सत्यं ज्ञानं अनन्तं ब्रह्म ।
एकं एवं अद्वितीयं ब्रह्म ।।
विज्ञानं आनन्दं ब्रह्म ।
प्रज्ञानं आनन्दं ब्रह्म ।।
असीमं अनन्तं अखण्डं ब्रह्म ।
शुद्धं बुद्धं नित्यं ब्रह्म ।।
अनादिं अनन्तं अचलं ब्रह्म ।
क्रियातीतं भावातीतं गुणातीतं ब्रह्म ।।
देहातीतं देशातीतं सर्वातीतं ब्रह्म ।
इन्द्रियतीतं प्रमाणातीतं कोषतीतं ब्रह्म ।।
निराकारं निर्विकारं निर्विशेषं ब्रह्म ।
निर्विकल्पं निरंजनं निरालम्बं ब्रह्म ।।
सत्यं बोधं आनन्दं ब्रह्म ।
निराभासं नामातीतं रुपातीतं ब्रह्म ।।
निष्प्रपन्चं र्निधर्मकं निष्कल्पं ब्रह्म ।
सनातनं पुरातनं कूटस्थं ब्रह्म ।।
निराधारं निराश्रयं निर्धिष्ठानं ब्रह्म ।
अकर्ताम अभोक्तां असगं ब्रह्म ।।
निर्वाणं निर्माणं निरहं ब्रह्म ।
निरामयं निर्मोहं निर्लिप्तं ब्रह्म ।।
निरपेक्षकं निरुपाधिकं निरालम्बं ब्रह्म ।
सर्वाधारं सर्वाकारं सर्वागम ब्रह्म ।।
स्थूलातीतं सूक्ष्मातीतं शब्दातीतं ब्रह्म ।
गन्धातीतं स्पर्शातीतं रसातीतं ब्रह्म।।
द्वन्दातीतं कालातीतं व्योमातीतं ब्रह्म ।
जाग्रतातीतं स्वप्नातीतं निद्रातीतं ब्रह्म ।।
निरामयं निराभाषं निरालम्बं ब्रह्म ।
महाकर्ता महाभोक्ता महामौनी ब्रह्म ।।
महादेशं महाकालं महादेवं ब्रह्म ।
अपारं अभेदं अभयं ब्रह्म ।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.